आ पांचे तणूं मूल कोय न प्रीछे, अनेक करे छे उपाय।
साध मोटा पोहोंचे सुन्य लगे, पण सत सुख केणे न लेवाय।। १७ ।।

इन पांच तत्वों की जड़ कहां है, कोई नहीं जान पाया। बहुतों ने उपाय किए तथा कुछ बड़े लोग शून्य तक पहुंचे भी, परन्तु अखण्ड सुख कोई नहीं ले सका।

वेदें वैराट जोयूं दसो दिसा, कही आ पांच चौदनी उतपन।
चौद लोक जोया चारे गमा, चाल्या आघा जोवा माहें सुंन।। १८ ।।

वेदों के ज्ञान से साधुओं ने ब्रह्माण्ड की दसों दिशाओं को देखा और यह जाना कि यह चौदह लोक पांच तत्व से पैदा हुए हैं। चौदह लोकों को भी चारों तरफ से देखा तो आगे शून्य निराकार ही पाया।

सुन्य जोयूं घणूं श्रम करी, त्यारे नाम धराव्या निगम।
सनंध न लाधी सुन्य तणी, त्यारे कहीनें वल्या अगम।। १९ ।।

बड़ा परिश्रम करके उन्होंने शून्य मण्डल को खोजा। जब उन्हें कुछ नहीं मिला तो अपने को निगम कहा। जब उनको शून्य की हकीकत नहीं मिली तो पारब्रह्म को अगम कहकर लौट आए।

वेदे वलतां वाणी जे ओचरी, ते तां चढी वैराट ने मुख।
कुलिए ते लई मुख विप्रोने, करी आपी व्रत भख।। २० ।।

वेदों ने (ब्रह्मा ने) लौटते समय जो वाणी कही, उसे चौदह लोकों के लोगों ने समझ लिया। कलियुग में पंडितों ने तो इसे अपनी रोजी-रोटी का धन्धा बना लिया।

वेद सनमुख चढ़या ज्यारे ऊंचा, त्यारे मूल हता पाताल।
फरीने वाणी पाछी वली, त्यारे थया मूल ऊंचा ने नीची डाल।। २१ ।।

वेद (ब्रह्मा) जब खोज करते हुए ऊंचे बढ़े क्योंकि उनकी उत्पत्ति नाभि-कमल से थी तब उन्होंने पाताल से चढ़ते-चढ़ते खोजना शुरू किया। बाद में निराकार से लौटते समय नीचे (चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड) का वर्णन करना शुरू किया। तब जड़ उलटी निराकार में और डालें पाताल की तरफ हो गईं, अर्थात् ज्ञान अधोमुखी (नीचे की तरफ देखने वाला) हो गया।

कल्प विरिख तिहां वेद थयो, तेहेनूं फल निपनूं भागवत।
बन पकव रस ग्रही मुनि थया, एम सुकें परसव्या संत।। २२ ।।

चाही हुई इच्छा को पूर्ण करने वाले वृक्ष अब वेद बन गए। इसका फल (सार) भागवत निकला। इस वन में पके फल के रस को लेने वाले शुकदेवजी हुए जिन्होंने रस ग्रहण कर ज्ञान संतों में बांटा।

ए रस सनमुख साध लई ने, वैकुण्ठ सुन्य समाय।
बीजा काष्ट भखी जन जे हेठां उतर्या, तेतां जल बिना लेहेरें पछटाय।। २३ ।।

इस रस को ग्रहण कर साधु लोग बैकुण्ठ व निराकार में जाकर समा जाते हैं। दूसरे लोग कष्ट उठाकर नीचे गिर पड़ते हैं और बिना जल के ही भवसागर में छटपटाते हैं।

।। प्रकरण ।। ६८ ।। चौपाई ।। ८६४ ।।

सुन्य मंडल सुध जो जो मारा संमंधी, आ इंडू जेहेने आधार।
नेत नेत कही ने निगम वलिया, निगम ने अगम अपार।। १ ।।

हे मेरे निसबती सुन्दरसाथजी! निराकार के मण्डल को देखो जिसमें इस ब्रह्माण्ड का आधार है। जहां वेद पहुंचकर नेति-नेति कहकर उलटे लौटे और पारब्रह्म को अगम कहा।

Nijanand App

इहां आद अंत नहीं थावर जंगम, अजवास न कांई अंधार जी।
निराकार आकार नहीं, नर न केहेवाय कांई नार जी।।२।।

यहां इसमें आदि-अन्त, चल-अचल, उजाला-अंधेरा, निराकार-आकार तथा स्त्री-पुरुष कुछ नहीं है।

नाम न ठाम नहीं गुन निरगुन, पख नहीं परवान जी।
आवन गवन नहीं अंग इन्द्री, लख न कांई निरमान जी।।३।।

नाम, स्थान, गुण, निर्गुण, पख (अंतःकरण), आना, जाना, अंग, इन्द्रियां, देखने में जो आता है, वह कुछ नहीं है।

इहां रूप न रंग नहीं तेज जोत, दिवस न कांई रात जी।
भोम न अगिन नहीं जल वाए, न सब्द सोहं आकास जी।।४।।

रूप नहीं है, रंग नहीं है। तेज, ज्योति, दिन, रात, भूमि, अग्नि, जल, वायु, आकाश और सोऽहं शब्द, आदि कुछ भी नहीं हैं।

इहां रस न धात नहीं कोई तत्व, गिनान नहीं बल गंध जी।
फूल न फल नहीं मूल बिरिख, भंग न कांई अभंग जी।।५।।

यहां रस, धातु, तत्व, ज्ञान, बल, सुगंधि कुछ भी नहीं है। फूल, फल, जड़, पेड़, मरण, जीवन भी नहीं हैं।

अखंड तणां दरवाजा आडी, सुन्य मंडल विस्तार जी।
एणें ठेकांणे बेठी अछती, बांधी ने हथियार जी।।६।।

इस शून्य मण्डल का विस्तार परदे के रूप में अखण्ड बेहद के दरवाजे तक है। इस ठिकाने पर काल निरंजन शक्ति हथियार बांध कर बैठी है।

ए बल जोजो बलवंती नूं, एहनो कोई न काढे पार जी।
अनेक उपाय कीधां घणें, पण कोए न पोहोंता दरबार जी।।७।।

इस बलवंती काल निरंजन की शक्ति को देखो। इसका किसी ने पार नहीं पाया है। इस कारण ही कोई परमधाम नहीं पहुंचा।

कोई न पोहोंतो इहां लगे, एहनो बोली मारे प्रताप जी।
आ पांचो एहनी छाया पड़ी छे, ए सुन्य मंडल विस्तार जी।।८।।

यहां निराकार तक कोई नहीं पहुंचा है। इसके नाम से बड़े-बड़े हार जाते हैं। यह पांच तत्व इसी की छाया है और इस तरह से यह शून्य मण्डल बना है।

।। प्रकरण ।। ६९ ।। चौपाई ।। ८७२ ।।

मूलगी चाल

हवे वासना हसे जे वेहदनी, ते जागीने जोसे निरधार।
सत असत बंने जुआ करसे, एहनो तेहज उघाडसे बार।।१।।

अब जो बेहद की आत्मा होगी वह जागकर देखेगी। वह हद और बेहद (झूठ और सत) को अलग-अलग करके बेहद के दरवाजे खोलेगी।

Nijanand App